पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

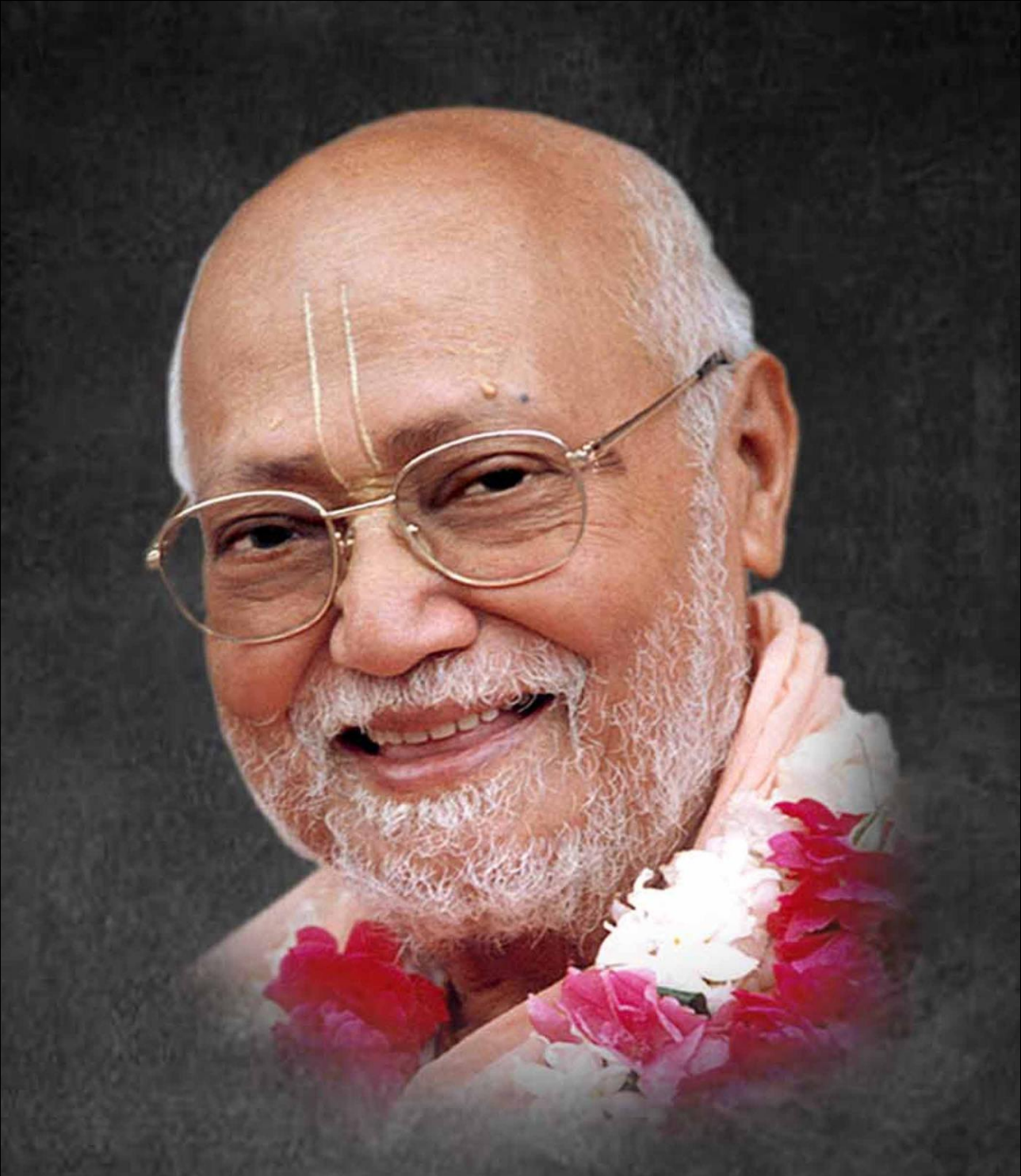

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 3

चण्डीगढ़ के श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में पंजाब के गवर्नर और मुख्यमन्त्री का शुभागमन

श्रीलगुरुदेव

श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में चण्डीगढ़ के श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में 27 मार्च 1974 से 31 मार्च तक जो पाँच दिनों का वार्षिक अनुष्ठान हुआ था उसमें प्रधान अतिथि रूप में उपस्थित थे- पंजाब के राज्यपाल, श्री महेन्द्र मोहन चौधरी एवं पंजाब के मुख्यमन्त्री, ज्ञानी श्रीजैल सिंह जी। सभापतित्त्व किया था - माननीय न्यायाधीश, श्री आर० एस० नरूला, माननीय न्यायाधीश, श्री

एच० आर० सोढी, चण्डीगढ़ केन्द्रीय प्रदेश के डिप्टी कमिश्नर, श्री जे० डी० गुप्ता, भूतपूर्व एम० पी०, श्री श्रीचन्द गोयल, श्रीगुरु गोविन्द सिंह कालेज के अध्यक्ष, श्रीगुरबख्शसिंह शेरगिल जी ने। इसके अलावा डाक्टर जी० पी० शर्मा, डाक्टर एस० पी० संगर, पंजाब के पूर्वमन्त्री, गुरबख्शसिंह सीबिया, चौधरी सुन्दर सिंह जी, एम्० एल० ए आदि विशिष्ट व्यक्ति भी उपस्थित थे। श्रील गुरुदेव जी का अतिशय हृदयग्राही भाषण सुनकर सभी बड़े प्रभावित हुये।31 मार्च रविवार को श्रीमठ के

अधिष्ठातृ-विग्रहों ने रथ पर विराजित होकर विराट संकीर्त्तन-शोभायात्रा के साथ नगर भ्रमण किया।

वर्ष 1974 में 27 मार्च से 31 मार्च तक चण्डीगढ़ स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के वार्षिक अनुष्ठान से पहले श्रील गुरुदेव जी ने मेदिनीपुर जिला के अन्तर्गत आनन्दपुर के वार्षिक धर्मसम्मेलन में, खड़गपुर स्थित आई.आई.टी. कालोनी स्टाफ क्लब में व उसके बाद उत्तर भारत के दिल्ली स्थित शक्करपुर अंचल में त्रिदण्डियति और

ब्रह्मचारियों को साथ लेकर शुभपर्दापण करते हुये श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की प्रेम-भक्ति की वाणी का प्रचार किया था।

आनन्दपुर :- श्रील गुरुदेव जी ने पुरुषोत्तमधाम से 15 मार्च 1974 शुक्रवार को यात्रा करके जब अगले दिन प्रातः आनन्दपुर में शुभपर्दापण किया तो आनन्दपुरवासी भक्तों ने बड़े ही विशाल तरीके से उनका स्वागत सत्कार किया। आनन्दपुरवासी भक्तों ने श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु जी के आविर्भाव उपलक्ष्य में पाँच दिनों का धर्म-

सम्मेलन और श्रीगौरांग-लीला प्रदर्शनी का आयोजन किया था। पहले व्यवस्था आदि के विषय में सहायता के लिये श्रील गुरुदेव जी के निर्देशानुसार वहाँ पहुँचे थे कोलकाता मठ से त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्तिललित गिरि महाराज जी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति सुहृद् दामोदर महाराज जी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति भूषण भागवत महाराज जी, श्री नोनीगोपाल वनचारी, श्री रमानाथ ब्रह्मचारी एवं चन्द्रकोणा मठ से परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विचार यायावर गोस्वामी महाराज जी के आश्रित

शिष्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विज्ञान भागवत महाराज जी । पत्रकार, श्री कुमारेश घोष, श्री राधारमण कर, श्री रामचन्द्र वन्द्योपाध्याय, श्री सरेन्द्रमोहन दे आदि मेदिनीपुर के विशिष्ट व्यक्ति सभा में सभापति और प्रधान अतिथि के रूप में उपस्थित थे- श्रील गुरुदेव जी के साथ पुरी से आये थे- श्रीमठ के सम्पादक, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज जी और श्री मदनगोपाल ब्रह्मचारी | श्रीचैतन्य महाप्रभु जी के अवदान - वैशिष्ट्य के सम्बन्ध में श्रील गुरुदेव जी का

हृदयग्राही व दिव्य ज्ञान से भरा प्रवचन सुनकर सभी बड़े ही प्रभावित हुये। श्रील गुरुदेव जी के शुभपदार्पण के दिन 15 मार्च दोपहर में बहुत सी मृदंगों और संकीर्त्तन पार्टी के साथ आनन्दपुर में विराट नगर संकीर्त्तन शोभायात्रा अनुष्ठित हुई थी। सम्मेलन के मुख्य व्यवस्थापक थे- श्री रामकृष्ण चांवरी महोदय। डाक्टर सरोज रंजन सेन के घर पर ही श्रील गुरुदेव जी ने अपने पार्षदों के साथ अवस्थान किया था।

खड़गपुर:- खड़गपुर स्थित श्रीचैतन्य आश्रम के अध्यक्ष, परमपूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति कुमुद सन्त महाराज जी के आमन्त्रण पर श्रील गुरुदेव जी ने 17 मार्च रविवार को आनन्दपुर से खड़गपुर के आश्रम में सपार्षद शुभपदार्पण किया। श्रीचैतन्य आश्रम की सुन्दर व्यवस्था से स्थानीय आई० आई० टी० कालोनी के स्टाफ क्लब में आयोजित सन्ध्या की विशेष धर्मसभा में एवं अगले दिन श्रीचैतन्य आश्रम में भी सन्ध्या की धर्मसभा में श्रील गुरुदेव जी ने

अपना दिव्य प्रवचन प्रदान किया। पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति कुमुद सन्त महाराज, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति सुहृद दामोदर महाराज तथा त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज जी ने भी वहाँ पर भाषण किया। वहाँ पर नगर - संकीर्त्तन का भी सुन्दर आयोजन किया गया। परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्ति कुमुद सन्त महाराज जी के विशेष आग्रह के कारण उनके प्रतिष्ठित श्रीगौरांग मठ के दर्शन के लिये श्रील गुरुदेव केशियाड़ी में भी गये थे।

शक्करपुर :- इसके बाद श्रील गुरुदेव जी ने कोलकाता से अपने दलबल के साथ 22 मार्च शुक्रवार को दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पर पहुँचते ही दिल्ली वासी श्रीचैतन्य गौड़ीय मठाश्रित भक्तों एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने संकीर्त्तन करते हुये पुष्पमालादि द्वारा वैष्णवों का स्वागत किया। 23 मार्च शनिवार से 25 मार्च सोमवार तक दिल्ली शहर के शक्करपुर एक्सटेन्शन इलाके में एक विराट-धर्मसभा का आयोजन हुआ | अपने प्रवचन में सम्मेलन के आयोजकों की प्रशंसा करते हुये श्रील गुरुदेव जी ने कहा कि

स्थानीय दिल्ली वासी भक्तों और सज्जनों ने मिलकर धर्म सम्मेलन और श्रीहरिनाम संकीर्त्तन का जो आयोजन किया है, उससे मैं अति सुखी हुआ हूँ। हरिनाम संकीर्त्तन हरेक प्रकार से शुभप्रद है। श्रीचैतन्य महाप्रभु जी ने हरिनाम संकीर्त्तन का प्रवर्त्तन किया है। उच्च संकीर्त्तन की प्रचुर महिमा शास्त्रों में कीर्तित हुई है। जो हरिनाम-कीर्त्तन में अनिच्छुक या असमर्थ हैं, उच्च स्वर में होने वाले संकीर्त्तन के द्वारा उनके भी कानों में हरिनाम प्रविष्ट होता है। वस्तु का गुण श्रद्धा या अश्रद्धा के ऊपर निर्भर नहीं करता है। कोई

जानता हो अथवा न जानता हो, आग में हाथ देने से जैसे उसका हाथ जल ही जाता है, वैसे ही जैसे भी हो जीव के कानों में हरिनाम का प्रवेश होने से उसका मंगल होगा ही। श्रील गुरुदेव जी के निर्देशानुसार त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज जी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रसाद पुरी महाराज जी, पण्डित श्रीराधा-वल्लभ शास्त्री और श्री प्रेमदास जी (देहरादून निवासी) ने भी अलग-अलग दिनों में अलगअलग समय पर भाषण दिये थे।

24 मार्च, रविवार दोपहर में विराट नगर-संकीर्त्तन शोभायात्रा निकाली गई। श्रील गुरुदेव जी के साथ में थे - पूज्यपाद श्रीमद् कृष्णकेशव ब्रह्मचारी, पूज्यपाद श्रीमद् ठाकुरदास ब्रह्मचारी, श्रीमद् भक्ति ललित गिरि महाराज, श्रीमद्भक्ति भूषण भागवत महाराज, श्री मदनगोपाल ब्रह्मचारी, श्री परेशानुभव ब्रह्मचारी, श्रीललितकृष्ण वनचारी, श्री बल्लभद्र ब्रह्मचारी, श्रीचिन्मयानन्द ब्रह्मचारी, श्री राम विनोद ब्रह्मचारी और श्री कृष्णगोपाल राय। इन सारे कार्यक्रमों में श्रील गुरुदेव जी के

श्रीचरणाश्रित दीक्षित गृहस्थ शिष्य श्री त्रिभुवन दासाधिकारी (श्री तिलकराज अरोड़ा) को श्रीचैतन्य वाणी के इस प्रचार सेवा के लिए मुख्य रूप से आशीर्वाद मिला था।

श्रीलगुरुदेव